CBSE कक्षा 11 अर्थशास्त्र

पाठ - 1 भारत का आर्थिक विकास

“स्वतंत्रता की समय भारतीय अर्थव्यवस्था”

पुनरावृत्ति नोट्स

स्मरणीय बिन्दु-

- अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन का मुख्य उद्देश्य भारत को ब्रिटेन में तेजी से विकसित हो रही आधुनिक अर्थव्यवस्था के लिए आधार के रूप में उपयोग करना था।
- **स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति**:-
  1. **आर्थिक विकास की निम्न दर:-**
     - औपनिवेशिक सरकार ने कभी भी भारत की राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय के अनुमान के लिए कोई प्रयास नहीं किए।
     - डॉ. वी.के.आर.वी.राव के अनुसार सकल देशीय उत्पाद में वार्षिक वृद्धि दर केवल 2% तथा प्रति व्यक्ति आय में वार्षिक वृद्धि केवल 0.5% थी।
  2. **कृषि का पिछड़ापन:-** जिसके निम्न कारण थे-
     - जमीदारी, महलवाड़ी तथा रैयतवाड़ी प्रथा
     - व्यवसायीकरण का दबाव - नील आदि का उत्पादन
     - देश के विभाजन के कारण पश्चिम बंगाल में जूट मिल और पूर्वी पाकिस्तान में उत्पादक भूमि चली गयी तथा विनिर्मित निर्यात में की और आयात में वृद्धि
  3. **अविकसित औद्योगिक क्षेत्र:-**
     - वि-औद्योगिकीकरण - भारतीय हस्तकला उद्योग का पतन
     - पूँजीगत वस्तुओं के उद्योग का अभाव
     - सार्वजनिक क्षेत्र की सीमित क्रियाशीलता
     - भेदभावपूर्ण टैरिफ नीति
  4. **विदेशी व्यापार की विशेषताएँ:-**
     - कच्चे माल का शुद्ध निर्यातक तथा तयार माल का आयातक
     - विदेशी व्यापार पर ब्रिटेन का एकाधिकारी नियंत्रण
     - भारत की सम्पति का बर्हिप्रवाह
  5. **प्रतिकल तत्कालीन जनांकिकीय दशाएँ:-**
     - ऊँची मृत्युदर - 45 प्रति हजार
     - उच्च शिशु जन्म दर - 218 प्रति हजार
     - सामूहिक निरक्षरता - 84 निरक्षरता

- निम्न जीवन प्रत्याशा - 32 वर्ष
- जीवन-यापन का निम्न स्तर - आय का 80-90% आधारभूत आवश्यकता पर व्यय
- जन स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव

6. **अविकसित आधारभूत ढाँचा:-**
    - अच्छी सड़कें, विद्युत उत्पादन, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा संचार सुविधाओं का अभाव।
    - यद्यपि अंग्रेज प्रशासकों द्वारा आधारभूत ढाँचे के विकास के लिए प्रयास किए गए जैसे – सड़कें, रेलवे, बंदरगाह, जल यातायात और डाक व तार विभाग।
    - लेकिन इनका उद्देश्य आम जनता को सुविधाएँ देना नहीं था बल्कि साम्राज्यवादी प्रशासन के हित में था।
7. **प्राथमिक (कृषि) क्षेत्र पर अधिक निर्भरता:-**
    - कार्यबल का अधिकतम भाग लगभग 72% कृषि एवं संबंधित क्षेत्र में लगा था।
    - 10% विनिर्माण क्षेत्र में लगा था।
    - 18% कार्यबल सेवा क्षेत्र मे लगा था।

- **अंग्रेजी साम्राज्यवाद के भारतीय अर्थव्यवस्था पर कुछ सकारात्मक प्रभाव:-**
    1. यातायात की सुविधाओं में वृद्धि - विशेषकर रेलवे में
    2. बंदरगाहों का विकास
    3. डाक व तार विभाग की सुविधाएँ
    4. देश का आर्थिक व राजनीतिक एकीकरण
    5. बैंकिंग व मौद्रिक व्यवस्था का विकास
- **अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद क भारतीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव:-**
    1. भारतीय हस्तकला उद्योग का पतन
    2. कच्चे माल का निर्यातक व तैयार माल का आयातक
    3. विदेशी व्यापार पर ब्रिटेन का एकाधिकारी नियंत्रण
    4. व्यवसायीकरण पर दबाव